सतत विकास की अवधारणा

दीपंकर श्री ज्ञान

21वीं सदी में गांधी जी के बताए रास्ते पर चलकर ही हम सतत विकास को पा सकते हैं। अमीरी और गरीबी के बीच की खाई को कम कर सकते हैं। सबको सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिलेगा साथ ही हम आने वाली पीढ़ी के लिए भी संसाधनों को संजोकर रख सकते हैं। प्रकृति को बिना नुकसान पहुंचाए, उसका उपयोग कैसे करें, यह हम गांधी जी से सीख सकते हैं। गांधी जी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में हमारे लिए यह एक विशेष अवसर है कि गांधी के बताए रास्ते पर हम चलें।

सतत विकास का अर्थ है, मानव का सर्वांगीण विकास। यह विकास की वह अवस्था है, जिसमें वर्तमान समय की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, आने वाली पीढ़ियां भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और विकास की इस प्रक्रिया में हमारा परितंत्र भी स्वस्थ एवं सतत अवस्था में बना रहे। सतत विकास की अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं और विद्वानों ने अनेक परिभाषाएं दी हैं, जिसका सार यह है कि विकास की वह अवधारणा, जिसमें हमारे प्राकृतिक संसाधनों से हमारी आवश्यकतानुसार उत्पादन होता रहे, जिससे मानव जीवन सुखी बना रहे और इस विकास के कारण संसाधनों के अस्तित्व को कोई खतरा पैदा न हो। महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में बहुत पहले ही सतत विकास की आवश्यकता और अंधाधुंध और लालचपूर्ण विकास को रोकने का सुझाव दिया था। उनका कहना था कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता में ही विनाश के बीज निहित है। हमारा लालच और जुनून पर अंकुश होना चाहिए। सतत विकास का केंद्र बिन्दु समाज की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करना होना चाहिए।

वास्तव में हमारे महापुरुषों, विद्वानों, पर्यावरणविदों ने यह महसूस करना आरंभ कर दिया था कि अंधाधुंध विकास की अवधारणा के चलते प्राकृतिक संसाधनों पर इसका घातक प्रभाव पड़ेगा। विशेषत: पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव और विकास के दुष्परिणामों को पर्यावरणविदों ने भांपना आरंभ कर दिया था। इन दुष्परिणामों में जल संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, जैव विविधता आदि शामिल हैं। विकास के चक्कर में आर्थिक असमानता ने भी मुंह उठाना आरंभ कर दिया था। अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई के चलते पर्यावरण के साथ-साथ समाज में भी असंतुलन पैदा होना आरंभ हो गया। इन सब स्थितियों के कारण विकास की एक नई अवधारणा की खोज आरंभ हुई। ऐसा विकास, जिसमें समाज का हर वर्ग विकसित हो। लोगों का सर्वांगीण विकास हो, यह विकास स्थायी हो और व्यापक हो।

क्या है सतत विकास

सतत विकास के बारे में अनेक विद्वानों ने अपना नजरिया पेश किया है,

लेकिन सबसे अधिक प्रचलित परिभाषा 1987 में ब्रटलैंड आयोग ने अपनी रिपोर्ट में दी। इस रिपोर्ट के अनुसार : ''विकास ऐसा होना चाहिए जो वर्तमान की जरूरतों की पूर्ति इस प्रकार करे, जिससे भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता पर असर न हो।'' इस आयोग के अनुसार सतत विकास के तीन उद्देश्य हैं : 1. आर्थिक कुशलता 2. सामाजिक स्वीकार्यता 3. पारिस्थितिकीय टिकाऊपन।

ब्रटलैंड आयोग की इस रिपोर्ट में विकास के विभिन्न मुद्दों को रेखांकित किया गया था। इसके अनुसार विकास के लिए उत्पादन व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए, जो पर्यावरण का सम्मान करने वाली हो। इसमें असंतुलित विकास से उपजे तनाव को दूर करने की व्यवस्था होनी चाहिए। आर्थिक वृद्धि को इस दिशा में काम करना चाहिए जिस दिशा में मानव की बुनियादी जरूरतें पूरी हो सकें। साथ ही विकास ऐसा होना चाहिए, जिसमें आय का समान वितरण हो, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कम हो। विश्व के आम नागरिकों तक रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, पेयजल स्वास्थ्य, शिक्षा की सुविधा अनिवार्य रूप से पहुंचे।

सतत विकास और पर्यावरण: अंधाधुंध विकास का जो प्रमुख परिणाम देखने में आया, वह था - पर्यावरण के संतुलन का बिगड़ना। 1972 में स्टॉकहोम में हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ के सम्मेलन में प्रथम बार वैश्विक स्तर पर पर्यावरण और विकास पर विमर्श हुआ और

लेखक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक हैं। ईमेल: divyagyan123@gmail.com

प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि इस मुद्दे पर तत्काल काम करना आवश्यक है। पहली बार इसमें पर्यावरणीय विकास की अवधारणा बनी और इसमें विकास को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ा गया।

वर्ष 1972 में ही क्लब ऑफ रोम द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट 'लिमिट्स टू ग्रोथ' में कहा गया कि यदि आर्थिक विकास की दर को संतुलित नहीं किया गया, तो हमें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। इस रिपोर्ट में बताया गया कि आर्थिक विकास के चलते पर्यावरण को गंभीर संकट पैदा हो गया है और इसे रोकना अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त 1972 के बाद अनेक ऐसी रिपोर्टें प्रकाशित होती रहीं, जिसमें अंधाधुंध विकास की दौड़ में पर्यावरण असंतुलन के खतरे के प्रति आगाह किया जाता रहा। इन रिपोर्टों में 1980 की संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम, विश्व वन्य निधि और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ द्वारा जारी रिपोर्ट, 1983 की ब्रटलैंड रिपोर्ट आदि शामिल हैं।

वर्ष 1992 में रियो डी जेनेरो में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। पृथ्वी सम्मेलन के नाम से प्रसिद्ध इस शिखर सम्मेलन में 178 देशों के प्रतिनिधियों ने सामाजिक आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण पर विमर्श किया। अधिकांश देशों का यह मानना था कि विकास ऐसा होना चाहिए, जो पर्यावरण के अनुकूल हो और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सके। इस सम्मेलन में पारित कुछ दस्तावेज इस प्रकार हैं :

एजेंडा-21 : इस एजेंडे में इस बात पर चर्चा की गई कि कैसे विकास को सामाजिक आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ बनाया जाए।

रियो घोषणा पत्र : इस घोषणा पत्र में सतत विकास के आधारभूत सिद्धांतों को शामिल किया गया। इसमें पर्यावरण विकास को समर्पित 27 बिन्दु शामिल किए गए थे।

ग्लोबल वार्मिंग संविदा : यह ग्लोबल वार्मिंग के दुष्परिणामों से बचने के लिए एक सार्वजनिक संधि थी, जिसके मुताबिक हस्ताक्षरी देश कार्बनडाईऑक्साइड, मीथेन जैसी हानिकारक गैसों का उपयोग कम करेंगे ताकि ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी को बचाया जा सके।

वनों से संबंधित सैद्धांतिक नीति : इसमें आशा की गई थी कि सभी देश यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके विकास के प्रारूप के कारण वनों का क्षय न होने पाए और वनों के संरक्षण को प्राथमिकता प्रदान की जाए।

इस सम्मेलन के बाद 1997 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने न्यूयार्क में एक विशेष सत्र बुलाया, जिसमें पृथ्वी सम्मेलन के मुद्दों पर विमर्श करने के बाद सतत विकास की ओर बढ़ने का संकल्प लिया गया। रियो 5 के नाम से इस सत्र को जाना जाता है। इसमें सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को और मजबूत करने और सतत विकास की अवधारणा को विश्व भर में स्थापित करने पर बल दिया गया।

सतत विकास और गांधी : विकास को लेकर महात्मा गांधी बड़े सजग और सतर्क थे। वे जानते थे कि विकास के नाम पर चल रही यह दौड़ अनेक समस्याओं को जन्म देगी, जिसे संभालना मुश्किल हो जाएगा। विकास की प्रचलित प्रणाली दुनिया के सामने संकट उत्पन्न करेगी। उन्होंने कहा कि मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यूरोपीय लोगों को अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा। यूके में एक व्यक्ति जितना उपभोग करता है, अगर दुनिया का हर व्यक्ति उतना ही उपभोग करे तो सब की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें धरती जैसे तीन ग्रहों की आवश्यकता होगी। विकास सर्वांगीण मानव सभ्यता के लिए है, जिसमें मनुष्य की मनुष्यता के लिए विशेष स्थान है। हिन्द स्वराज में गांधी जी कहते हैं, ''पहले तो हम यह सोचें कि सभ्यता किस हालत का नाम है। इस सभ्यता की सही पहचान तो यही है कि लोग बाहरी दुनिया की खोज में और शरीर के सुख में धन्यता-सार्थकता और पुरुषार्थ मानते हैं। इसकी कुछ मिसालें लें- ''सौ साल पहले यूरोप के लोग जैसे घरों में रहते थे उनसे ज्यादा अच्छे घरों में आज वे रहते हैं, यह सभ्यता की निशानी मानी जाती है। इसमें शरीर के सुख की बात है। इससे पहले लोग चमड़े के कपड़े पहनते थे और भालों का इस्तेमाल करते थे। अब वे लंबे पतलून पहनते हैं और शरीर को सजाने के लिए तरह-तरह के कपड़े बनवाते हैं और भाले के बदले एक के बाद एक पांच गोलियां छोड़ सकें, ऐसी चक्र वाली बंदूक का इस्तेमाल करते हैं। यह सभ्यता की निशानी है''।

इस तरह की सभ्यता ने मनुष्य से मनुष्य को दूर कर दिया है और हम ज्यादा विध्वंसक हो गए हैं। हमने विनाशक शक्तियों को बढ़ावा देने का काम किया है। आज पूरी दुनिया युद्ध के मुहाने पर खड़ी है। शांति और सद्भाव के द्वारा हम दुनिया में अमन और चैन कायम कर सकते हैं। शांति कायम करने के लिए सबसे आवश्यक तत्व है कि हम सीमित संसाधनों में अपने जीवन को बेहतर तरीके से जीना सीखें। हम अपनी जरूरत जैसे-जैसे बढ़ाते जाते हैं, दूसरों के हक पर अपनी बढ़त बनाते जाते हैं। यहां दूसरों के हक का तात्पर्य है कि हम उस अंतिम आदमी को दरकिनार कर रहे हैं, जिसको सबसे ज्यादा आवश्यकता है संसाधनों की। यहां यह गौर करने लायक बात है कि कम से कम संसाधन के उपयोग से हम अपने आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ छोड़ जाएंगे। भारत की सभ्यता में सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना सम्मिलित रही है। भारतीय सभ्यता के विषय में अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में गांधी जी कहते हैं, ''मैं मानता हूं कि जो सभ्यता हिन्दुस्तान ने दिखाई है, उसको दुनिया में कोई नहीं पहुंच सकता। जो बीज हमारे पुरखों ने बोए हैं, उसकी बराबरी कर सकें ऐसी कोई चीज देखने में नहीं आई। रोम मिट्टी में मिल गया, ग्रीस का सिर्फ नाम रह गया, मिस्र की बादशाहत चली गई। जापान पश्चिम के शिकंजे में फंस गया। लेकिन गिरा टूटा जैसा भी हो, हिन्दुस्तान आज भी अपनी बुनियाद में मजबूत है।''

21वीं सदी में गांधी जी के बताए रास्ते पर चलकर ही हम सतत विकास को पा सकते हैं। अमीरी और गरीबी के बीच की खाई को कम कर सकते हैं। सबको सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिलेगा साथ ही हम आने वाली पीढ़ी के लिए भी संसाधनों को संजोकर रख सकते हैं। प्रकृति को बिना नुकसान पहुंचाए, उसका उपयोग कैसे करें यह हम गांधी जी से सीख सकते हैं। गांधी जी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में हमारे लिए यह एक विशेष अवसर है कि गांधी के बताए रास्ते पर हम चलें। ❑